स्नातक पाठ्यक्रम अर्थशास्त्र (NEP 2020)

Graduate course Economics (NEP 2020)

प्रश्न पत्र 1	अर्थशास्त्र के सिद्धान्त
प्रश्न पत्र 2	मुद्रा, बैंकिंग तथा विदेशी व्यापार
प्रश्न पत्र 3	भारतीय अर्थव्यवस्था का विश्लेषण
प्रश्न पत्र 4	अर्थशास्त्रीय गणित
प्रश्न पत्र 5	आर्थिक विकास एवं पर्यावरण
प्रश्न पत्र 6	आर्थिक विचारों का इतिहास
प्रश्न पत्र 7	लोकवित्त तथा रोजगार का सिद्धान्त
प्रश्न पत्र 8	कृषि एवं ग्रामीण अर्थशास्त्र

स्नातक पाठ्यक्रम– अर्थशास्त्र (UG Course Economics)
प्रश्नपत्र–संरचना (NEP 2020)

Semester/सेमेस्टर	Course Code/ पाठ्यक्रम कोड	Title of the Course/ पाठ्यक्रम का शीर्षक		Credits/ क्रेडिट	Compulsory/Elective अनिवार्य / वैकल्पिक	Marks / अंक
Compulsory Core Course/विषय केन्द्रित अनिवार्य पाठ्यक्रम						
प्रथम सेमेस्टर	UGEC-101	अर्थशास्त्र के सिद्धान्त		4	अनिवार्य	100
द्वितीय सेमेस्टर	UGEC-102	मुद्रा बैंकिंग तथा विदेशी व्यापार		4	अनिवार्य	100
तृतीय सेमेस्टर	UGEC-103	भारतीय अर्थव्यवस्था का विश्लेषण		4	अनिवार्य	100
चतुर्थ सेमेस्टर	UGEC-104	अर्थशास्त्रीय गणित		4	अनिवार्य	100
Discipline Centric Elective Course/विषय केन्द्रित पाठ्यक्रम						
पंचम सेमेस्टर	DCEEC-101	आर्थिक विकास एवं पर्यावरण		3	अनिवार्य	100
	DCEEC-102	आर्थिक विचारों का इतिहास		3		
षष्ठ सेमेस्टर	DCEEC-103	लोकवित्त तथा रोजगार का सिद्धान्त		3	अनिवार्य	100
	DCEEC-104	कृषि एवं ग्रामीण अर्थशास्त्र		3		
Skill Enhancement Course / कौशल विकास पाठ्यक्रम						
प्रथम सेमेस्टर	SETP-01(N)	व्यवहारिक अनुवाद में कौशल संवर्धन पाठ्यक्रम		4	अनिवार्य	100
द्वितीय सेमेस्टर	SECT -02 (N)	कम्प्यूटर तकनीकी में कौशल संवर्धन पाठ्यक्रम		4	अनिवार्य	100
तृतीय सेमेस्टर	SES & T-01 (N)	विज्ञान एवं तकनीकी में कौशल विकास पाठ्यक्रम		4	अनिवार्य	100
चतुर्थ सेमेस्टर	SEIC & T-02 (N)	भारतीय संस्कृति एवं पर्यटन में कौशल विकास पाठ्यक्रम		4	अनिवार्य	100
पंचम सेमेस्टर	SESP-03 (N)	सचिवीय कार्य पद्धति में कौशल विकास पाठ्यक्रम		4	अनिवार्य	100
षष्ठ सेमेस्टर	SEINS-04(N)	बीमा में कौशल विकास पाठ्यक्रम		4	अनिवार्य	100
Ability Enhancement Compulsory Courses/योग्यता प्रदायी अनिवार्य पाठ्यक्रम						
प्रथम सेमेस्टर	AECEG or AECHD	अंग्रेजी में योग्यता संवर्धन पाठ्यक्रम Or हिन्दी में योग्यता संवर्धन पाठ्यक्रम		4 or 4	वैकल्पिक	100
द्वितीय सेमेस्टर	AECHR Or AECHH	मानवाधिकार एवं कर्तव्य में योग्यता संवर्धन पाठ्यक्रम Or स्वास्थ्य एवं स्वच्छता में योग्यता संवर्धन पाठ्यक्रम		4 or 4	वैकल्पिक	100
तृतीय सेमेस्टर	AECEA Or AESWM	पर्यावरण जागरूकता में योग्यता संवर्धन पाठ्यक्रम Or ठोस अपशिष्ट प्रबंधन योग्यता संवर्धन पाठ्यक्रम		4 Or 4	वैकल्पिक	100
चतुर्थ सेमेस्टर	AECNC Or AEDM	समुदाय के लिए पोषण में योग्यता संवर्धन पाठ्यक्रम Or आपदा प्रबंधन में योग्यता संवर्धन पाठ्यक्रम		4 Or 4	वैकल्पिक	100
Literary Survey/Research Projects/Field Work						
पंचम सेमेस्टर	V	AR-101 N	परियोजना कार्य	4	अनिवार्य	100
षष्ठ सेमेस्टर	VI	AR-102 N	परियोजना कार्य	4	अनिवार्य	100

UGEC-101

अर्थशास्त्र के सिद्धान्त
Principles of Economics

खण्ड – 1 अर्थशास्त्र के सिद्धान्त , राष्ट्रीय आय, उपभोक्ता व्यवहार एवं माँग

1. अर्थशास्त्र की परिभाषा एवं विषय – क्षेत्र, व्यष्टि तथा समष्टि अर्थशास्त्र
2. राष्ट्रीय आय अवधारणाएँ, मापन की विधियाँ, राष्ट्रीय आय का आर्थिक विकास में महत्व
3. उपभोक्ता का सन्तुलन
4. उपयोगिता का गणना वाचक एवं क्रम वाचक दृष्टिकोण एवं व्यवहारवादी विश्लेषण उदासीनता वक्र – विश्लेषण, प्रकट अधिमान सिद्धान्त, उपभोक्ता का संतुलन (हिक्स एवं स्लट्स्की)
5. माँग का अर्थ, माँग को निर्धारित करने वाले तत्त्व, माँग तालिका, माँग वक्र, माँग का नियम
6. माँग की लोच–अर्थ, परिभाषा, कीमत आय, एवं तिर्यक लोच मापने की विधियाँ

खण्ड – 2 उत्पादन, लागत सिद्धान्त एवं बाजार

1. उत्पादन फलन, परिवर्तनशील अनुपात का नियम
2. पैमाने का प्रतिफल एवं लागत की अवधारणाएँ
3. बाजार का अर्थ और उसके विभिन्न रूपःतत्व एवं वर्गीकरण
4. पूर्ण प्रतियोगिता, विशुद्ध एकाधिकार एवं एकाधिकारात्मक प्रतियोगितायें : अर्थ, परिभाषा एवं विशेषताएँ
5. पूर्ण प्रतियोगिता, विशुद्ध एकाधिकार एवं एकाधिकारात्मक प्रतियोगिताओं के औसत और सीमान्त आगम के वक्र तथा माँग वक्र

खण्ड – 3 फर्म एवं उद्योग का सन्तुलन एवं कीमत निर्धारण

1. पूर्ण प्रतियोगिता : अल्पकालीन बाजार एवं दीर्घकालीन बाजार में फर्म एवं उद्योग का सन्तुलन
2. विशुद्ध एकाधिकार : अल्पकालीन बाजार एवं दीर्घकालीन बाजार में फर्म का संतुलन
3. एकाधिकारात्मक प्रतियोगिताएँ : अल्पकालीन बाजार एवं दीर्घकालीन बाजार में फर्म का संतुलन, अल्पाधिकार

खण्ड 4 – वितरण, आर्थिक व्यवस्था

1. वितरण का सीमान्त उत्पादकता सिद्धान्त
2. लगान : रिकार्डो का सिद्धान्त, लगान का आधुनिक सिद्धान्त
3. मजदूरी : परिचय, नकद एवं असल मजदूरी, मजदूरी निर्धारण का आधुनिक सिद्धान्त
4. ब्याज : क्लासिकल सिद्धान्त, ब्याज का तरलता अधिमान सिद्धान्त
5. लाभ : नाइट जोखिम एवं अनिश्चितता वहन, प्रो. जे.के.मेहता का लाभ सिद्धान्त, शुम्पीटर का सिद्धान्त

UGEC-102

मुद्रा, बैंकिंग तथा विदेशी व्यापार

खण्ड 1 – मुदा की अवधारणा एवं मुद्रा का मूल्य

1. मुद्रा की परिभाषा एवं मुद्रा के कार्य
2. फिशर का विनिमय समीकरण एवं क्रैम्ब्रिज समीकरण, मुद्रा परिमाण का सिद्धान्त (QTM)
3. कीन्स का मौलिक समीकरण एवं आधुनिक सिद्धान्त
4. मुद्रा स्फीति एवं अवस्फीति, स्फीति के प्रकार, स्फीति रोकने के उपाय
5. मंदी, अवसाद, आर्थिक मंदी

खण्ड 2 – मुद्रा की पूर्ति , मौद्रिक नीति एवं बैंकिंग

1. मुद्रा की पूर्ति एवं मौद्रिक नीति की अवधारणाएँ, मुद्रा गुणक
2. राजकोषीय नीति एवं निर्देशांक
3. व्यापारिक बैंक–अर्थ तथा कार्य, साख सृजन : उद्देश्य एवं सीमाएं, राष्ट्रीयकरण के बाद व्यापारिक बैंक की प्रगति
4. केन्द्रीय बैंक : अर्थ तथा कार्य
5. साख नियन्त्रण के तरीके : परिमाणात्मक तथा गुणात्मक साख नियन्त्रण
6. भारतीय मौद्रिक नीति

खण्ड 3 विदेशी विनिमय, अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार

1. विदेशी विनिमय बाजार, विनिमय दर का निर्धारण एवं विनिमय नियन्त्रण : आशय तथा उद्देश्य
2. क्रय शक्ति समता सिद्धान्त एवं भुगतान संतुलन सिद्धान्त
3. अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के सिद्धान्त : निरपेक्ष लाभ एवं तुलनात्मक लागत का सिद्धान्त, अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का अवसर लागत सिद्धान्त, हेक्शर–ओहलिन का सिद्धान्त ।
4. व्यापार संतुलन एवं भुगतान संतुलन।
5. भुगतान संतुलन घाटा एवं असाम्य तथा साम्य हेतु विधियाँ।
6. अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार की आर्थिक विकास में भूमिका

खण्ड 4– अन्तर्राष्ट्रीय संस्थायें

1. आई.एम.एफ., आई.बी. आर.डी.
2. अंकटाड, डब्ल्यू.टी.ओ., G20, ASEAN, SAARC
3. व्यापार संबन्धी बौद्धिक परिसंपदा अधिकार तथा व्यापार एवं सेवा संबन्धी करार।

UGEC-103

भारतीय अर्थव्यवस्था का विश्लेषण

खण्ड 1 – भारत की आर्थिक नीति एवं भारतीय कृषि

1. औद्योगिक नीति
2. भारतीय कृषि नीति : कृषि विकास की व्यूह रचना
3. वैश्वीकरण एवं बाजार व्यवस्था
4. कृषि उत्पादन एवं उत्पादकता
5. भू धारण प्रणाली एवं भूमि सुधार
6. सामुदायिक विकास एवं राष्ट्रीय विस्तार सेवा
7. पंचायती राज व्यवस्था
8. वर्तमान कृषि संकट एवं कृषि मूल्य, प्राकृतिक कृषि

खण्ड 2 – भारतीय उद्योग एवं औद्योगिक मजदूर

1. लघु एवं कुटीर उद्योग : महत्व, वर्तमान स्थिति, MSME
2. भारत के प्रमुख उद्योग : चीनी उद्योग, वस्त्र उद्योग, लौह एवं इस्पात उद्योग आदि
3. व्यवस्थित उद्योग : औद्योगिक मजदूरी, मजदूरी नियमन
4. सामाजिक सुरक्षा व श्रमकल्याण
5. औद्योगिक विवाद एवं औद्योगिक शान्ति

खण्ड 3 – गरीबी एवं बेरोजगारी

1. भारत में निर्धनता : निरपेक्ष एवं सापेक्ष गरीबी, गरीबी मापन की विधियाँ, अमर्त्य सेन का समानता माप
2. गरीबी निवारण की विधियाँ : अवसर, सशक्तीकरण एवं सुरक्षा
3. भारत में बेरोजगारी : अदृश्य बेरोजगारी, शिक्षित बेरोजगारी
4. रोजगार योजनाएँ, MANREGA आदि
5. बाजार व्यवस्था एवं आर्थिक विषमताएँ

खण्ड 4 – भारतीय अर्थव्यवस्था की वर्तमान समस्याएँ

1. समान्तर अर्थव्यवस्था, कालाधन एवं भ्रष्टाचार
2. वैश्वीकरण बाजार व्यवस्था एवं वैचारिक खालीपन
3. समावेशी विकास

खण्ड 5 – जनसंख्या एवं संपोषित विकास

1. भारत की जनसंख्या : वृद्धिदर, संरचना, जनसंख्या लाभांश
2. जनसंख्या एवं उसके गुणात्मक पहलू
3. प्रदूषण, वैश्विक उष्मीकरण
4. संपोषित विकास

UGEC-104

अर्थशास्त्रीय गणित

खण्ड 1 – गणितीय अर्थशास्त्र : परिचय एवं अवकलन

1. अवकलन : आंशिक अवकलन, साधारण अवकलन तथा पूर्ण अवकलन।
2. अवकलन प्रयोग, माँग की लोच, आंशिक लोच
3. समाकलन : अर्थ, प्रयोग : उपभोक्ता एवं उत्पादक की बचत
4. उच्चिष्ठ एवं निम्निष्ठ
5. प्रथम और उच्च कोटि के अवकलन उच्चतम एवं न्यूनतम और आर्थिक अनुप्रयोग।
6. दो तथा दो से अधिक चरों से संबन्धित अवकलन
7. दो चरों से सम्बन्धित अवकलन के आर्थिक प्रयोग : उपभोक्ता एवं उत्पादक साम्य

खण्ड 2 – सारणिक अवधारणा एवं समंको का विश्लेषण

1. सारणिक आव्यूह, गुण– उपसारणिक एवं सहखण्ड
2. सारणिक के प्रयोग, क्रेमर के नियम
3. आव्यूह के प्रकार एवं गुण, आव्यूह गुणन
4. समंको का प्रस्तुतीकरण, आवृत्ति वितरण
5. केन्द्रीय प्रवृत्ति की मापें– माध्य, माध्यिका, बहुलक
6. अपकिरण की मापें, प्रमाप विचलन, प्रमाप विचलन का गुणांक
7. चतुर्थक विचलन, विषमता तथा उनका माप
8. लारेंज वक्र

खण्ड 3 – सहसम्बन्ध विश्लेषण

1. सहसम्बन्ध : अर्थ, महत्व, प्रकार, परिमाण
2. सहसम्बन्ध विश्लेषण, सरल बहुगुणी तथा आंशिक सहसम्बन्ध
3. सहसम्बन्ध गुणांक, कार्ल पियर्सन तथा स्पिरयरमैन का कोटि अन्तर गुणांक
4. प्रतिपगमन, अर्थ, उपयोग, सहसम्बन्ध से अन्तर
5. प्रतीपगमन विश्लेषण, प्रतीपगमन रेखाएं

खण्ड 4 – काल श्रेणी का विश्लेषण

1. काल श्रेणी का विश्लेषण, काल श्रेणी के अवयव
2. उपनति का निर्धारण, सामयिक परिवर्तन
3. सूचकांक मूल्य सापेक्ष तथा मात्रा सापेक्ष, लास्पेयर पाशे
4. फिशर का सूचकांक, आदर्श सूचकांक का परीक्षण
5. उपभोक्ता मूल्य सूचकांक

खण्ड 5 – अर्थशास्त्र में गणित का महत्व एवं भूमिका

1. फलन, चर
2. समिकाएँ एवं समीकरण

आर्थिक विकास एवं पर्यावरण
DCEEC-101

खण्ड 1 – मूल अवधारणाएँ

1. प्राथमिक अर्थव्यवस्था की विशेषताएँ
2. आर्थिक संवृद्धि एवं आर्थिक विकास, विकास के आर्थिक एवं गैर आर्थिक कारक
3. विकास के मान सकल राष्ट्रीय उत्पाद, PQLI जीवन स्तरीय निर्देशांक, मानव विकास (Human Development) एवं मानव विकास निर्देशांक (HDI)
4. उभरती हुई बाजार अर्थव्यवस्था
5. पर्यावरण एवं आर्थिक विकास

खण्ड 2 – अल्प विकास के सिद्धान्त

1. नव–क्लासिकी अपूर्ण बाजार सिद्धान्त, दरिद्रता का दुश्चक्र (नर्क्स) सिद्धान्त
2. मिर्डल का संचयी प्रक्रिया अवधारणा।
3. जनसंख्या एवं आर्थिक विकास, नेल्सन का निम्न स्तरीय संतुलन अवधारणा, (Backwash and spread effects) विपरीत बहाव व फैलाव प्रभाव।
4. लिबेन्सटीन का क्रान्तिक न्यूनतम प्रयास अवधारणा, लुइस का द्विक्षेत्रीय विकास का मॉडल आदि।
5. संतुलित एवं असंतुलित वृद्धि का सिद्धान्त
6. रोजेन्स्टीन रोडान का ''प्रबल प्रयास'' सिद्धान्त व अन्य सिद्धान्त
7. जॉन रोबिन्सन का संवृद्धि मॉडल
8. तकनीकी द्वय मॉडल

खण्ड 3 – गरीबी एवं न्याय (सशक्तीकरण) के विषय

1. निरपेक्ष एवं सापेक्ष गरीबी
2. गरीबी निवारण हेतु सरकार की योजनाएँ
3. खाद्य सुरक्षा
4. शिक्षा एवं स्वास्थ्य विकास

खण्ड 4 – पर्यावरण

1. पर्यावरण की अवधारणाएँ, जैविक विविधता, वहन क्षमता
2. चक्रीय आर्थिक प्रवाह एवं पर्यावरण
3. पारिस्थितिकी विकास।
4. प्रदूषण एवं प्रदूषण एजेन्ट
5. पर्यावरण क्षरण एवं प्रभाव
6. पर्यावरणीय लेखांकन
7. पर्यावरण प्रबन्धन सिद्धान्त Cossetheorem, polluter pay principle
8. वर्तमान पर्यावरणीय वैश्विक प्रयास एवं संस्थाएँ
   – वियना कन्वेन्शन World summit (Vienna convention) 1985
   – पृथ्वी सम्मेलन

आर्थिक विचारों का इतिहास
DCEEC-102

खण्ड 1 – प्राचीन आर्थिक विचारक

1. प्लेटो के आर्थिक विचार, अरस्तू का न्यायसंगत मूल्य तथा लागत विचार
2. वणिकवाद–मुख्य विशेषताएँ
3. प्रकृतिवाद, प्राकृतिक व्यवस्था
4. पैटी, लॉक तथा ह्यूम के आर्थिक विचार
5. एडम स्मिथ–श्रम विभाजन
6. वितरण का सिद्धान्त, व्यापार से सम्बन्धित विचारधारा, आर्थिक प्रगति
7. मूल्य का सिद्धान्त, धन संचय

खण्ड 2 – रिकार्डो, माल्थस एवं मिल

1. डेविड रिकार्डो का लगान तथा मूल्य का सिद्धान्त
2. अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का सिद्धान्त
3. माल्थस का जनसंख्या सिद्धान्त, अति उत्पादन का सिद्धान्त
4. जे.एस. मिल की विचारधारा, पारस्परिक मॉग सिद्धान्त
5. जर्मनी का इतिहासवादी सम्प्रदाय, सिसमाण्डी
6. कार्ल मार्क्स का सामाजिक परिवर्तन चिन्तन, मूल्य का सिद्धान्त
7. सीमान्त विचारधाराः जेवन्स, मेंगर, वालरा, बाम बॉवर्क

खण्ड 3 – कीन्सीयन क्रान्ति एवं पूर्ववर्ती/उत्तरवर्ती विचारक

1. अल्फ्रेड मार्शल एवं पीगू
2. जान मेनर्ड कीन्स एवं कीन्सीयन क्रान्ति
3. शुम्पीटर – साहसी की भूमिका व नव प्रवर्तन, विकास सिद्धान्त
4. नव क्लासिकी विचारक – मिल्टन फ्रीडमैन

खण्ड 4 – भारतीय आर्थिक विचारक

1. भारतीय आर्थिक विचार : कौटिल्य, तिरूवल्लुवर, दादाभाई नैरोजी, रानाडे, गोखले
2. गाँधी जी के आर्थिक विचार, स्वदेशी विचारधारा, श्रम तथा मशीनों का महत्व, न्यायवादी सिद्धान्त
3. जे.के. मेहता के विचार
4. बी.आर. अम्बेडकर के आर्थिक विचार
5. नेहरू का प्रजातांत्रिक समाजवाद
6. पाल.ए. सैम्मुलसन एवं सर जान हिक्स
7. अमर्त्यसेन एवं अन्य नोबेल अर्थशास्त्री

लोकवित्त तथा रोजगार का सिद्धान्त
DCEEC-103

खण्ड 1 – लोकवित्त की अवधारणा एवं सार्वजनिक व्यय

1. लोकवित्त का आशय तथा विषयवस्तु
2. लोकवित्त तथा व्यक्तिगत वित्त, सार्वजनिक वस्तु, मेरिट वस्तु, व्यक्तिगत वस्तु,
3. अधिकतम सामाजिक कल्याण का सिद्धान्त
4. राजकोषीय नीति एवं मौद्रिक नीति का संबन्ध
5. सार्वजनिक व्यय आशय, वर्गीकरण, नियम तथा प्रभाव
6. वैगनर का बढ़ती हुयी राजकीय क्रियाओं का सिद्धान्त
7. सार्वजनिक व्यय एवं आर्थिक विकास

खण्ड 2 – सार्वजनिक आय

1. सार्वजनिक आय : आशय एवं महत्व
2. कर : आशय, वर्गीकरण
3. करारोपण के सिद्धान्त तथा करभार, करों के प्रभाव
4. चालू घाटा, वित्तीय घाटा, एवं मौद्रिक घाटा

खण्ड 3 – सार्वजनिक ऋण

1. सार्वजनिक ऋण का आशय, वर्गीकरण तथा स्रोत
2. सार्वजनिक ऋण के प्रभाव, सार्वजनिक ऋण के भुगतान की विधियाँ एवं आर्थिक विकास
3. भारत में सार्वजनिक ऋण का विकास
4. भारत में युद्ध वित्तपोषण की प्रवृत्तियाँ

खण्ड 4 – राजकोषीय नीति एवं बजट

1. राजकोषीय नीति अर्थ तथा उद्देश्य
2. सार्वजनिक बजट, राजस्व, पूँजी बजट तथा भारत में बजट प्रक्रिया
3. घाटे की वित्त व्यवस्था

खण्ड 5 – रोजगार सिद्धान्त

1. रोजगार का क्लासिकल सिद्धान्त : बाजार का नियम
2. विनियोग तथा बचत विश्लेषण तथा कीन्स का रोजगार सिद्धान्त
3. आय का निर्धारण कीन्स का रोजगार सिद्धान्त
4. गुणक तथा त्वरक सिद्धान्त
5. कीन्स के सिद्धात की अल्पविकसित अर्थव्यवस्थाओं के लिए प्रासंगिकता

खण्ड 6 – व्यापार चक्र

1. व्यापार चक्र आशय तथा व्यापार चक्र की विभिन्न अवस्थाएँ
2. व्यापार चक्र का मौद्रिक सिद्धान्त
3. हेयक का सिद्धान्त
4. कीन्स एवं हिक्स का सिद्धान्त
5. वैश्विक वित्त संकट

कृषि एवं ग्रामीण अर्थशास्त्र
Economics of Agriculture and Rural Development
DCEEC-104

प्रथम खण्ड : भारतीय ग्रामीण अर्थव्यवस्था की संरचना

1. भारतीय ग्रामीण अर्थव्यवस्था एक परिचय
2. भारतीय किसानों की ऋणग्रस्तता एवं गरीबी
3. देश की आजादी एवं कृषि विकास के प्रति दृष्टिकोण
4. गांधी एवं नेहरू का विकास के प्रति दृष्टिकोण
5. भारत में भूमि सुधार एवं पंचायती राज व्यवस्था
6. खण्ड स्तरीय योजनाएँ : भूदान (संत बिनोवा) व ग्रामदान योजनाएँ सामुदायिक विकास
7. लघु एवं कुटीर उद्योग

खण्ड 2 – सहकारिता आन्दोलन एवं ग्रामीण विकास

1. सहकारिता आन्दोलन एवं परिचय
2. सहकारिता आन्दोलन का ढाँचा : (i) कृषि एवं गैर कृषि साख समितियाँ
   (ii) साख एवं गैर साख समीतियाँ
3. सहकारी खेती
4. भारत में सहकारिता आन्दोलन की असफलता के कारण

खण्ड 3 – कृषि विकास के तकनीकी पहलू एवं कृषि विपणन एवं ग्रामीण साख

1. भारत में 1960 के दशक में खाद्यान्न समस्या एवं महगाई
2. ग्रामीण विकास की नवीन व्यूहरचना
3. हरित क्रान्ति एवं उसका विस्तार तथा हरित क्रान्ति के प्रभाव : आय एवं उत्पादन पर प्रभाव
4. कृषि विपणन एवं ग्रामीण साख, RIDF, NABARD, RRBs

खण्ड 4 – खेतिहर मजदूर,उनकी समस्याएँ एवं समाधान के प्रयास

1. ग्रामीण बेरोजगारी एवं गरीबी
2. कृषि श्रमिकों की मजदूरी एवं शहरों की ओर पलायन
3. समन्वित ग्रामीण विकास योजना (IRDP) एवं ग्रामीण रोजगार कार्यक्रमों की अधुनातन स्थिति।
4. महात्मा गाँधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार योजना MNREGA की भूमिका
5. डॉ0 कलाम का PURA मॉडल एवं उनका चिन्तन
6. भूमण्डलीकरण एवं भारतीय कृषि

खण्ड 5 – कृषि मूल्य एवं नीति

1. कृषि मूल्य एवं उत्पादन
2. कृषि मूल्य नीति
3. खाद्य सुरक्षा
4. नई कृषि नीति